International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 25-01-2019; Accepted: 28-02-2019
www.educationjournal.org
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 63-65

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंताओं का अध्ययन

जयसिंह जोधा [1], डॉ॰ अमित कुमार दवे [2]

[1] शोधार्थी, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.), भारत।

[2] पर्यवेक्षक, (सहायक आचार्य), लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.), भारत।

प्रस्तावना

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। आज प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा हो गई है चाहे शिक्षा हो या व्यापार, नौकरी हो अथवा व्यवसाय। जहाँ एक ओर बेरोजगारी बढ़ रही है वहीं युवाओं में दुश्चिन्ता बढ़ने लगी है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में दुश्चिन्ताओं से ग्रसित युवा वर्ग को अपनी आजीविका के साधन तलाशने में विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि उसकी व्यावसायिक महत्त्वकांक्षाए अनन्त है किन्तु जब विद्यार्थी के सम्मुख तनावपूर्ण माहौल होता है तो उसकी शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती, जिसके कारण वह कभी क्रोधित होता है तो कभी दुख एवं निराश का अनुभव करता है। इस प्रकार के वातावरण से उसमें धीरे–धीरे डर एवं तनाव उत्पन्न होने लगता है वह दुश्चिंताओं से घिर जाता है। जिससे उनके व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

विद्यार्थी स्वयं को असफल समझने लगता है एवं अवसाद से घिर जाता है, वह घोर चिन्ता में ग्रसित होकर अपने को हीन समझने लगता है, जिससे हीनता की ग्रन्थि विकसित हो जाती है। वह अपने जीवन के लक्ष्य को छोड़ने पर मजबूर हो जाता है। स्वयं को अक्षम मानने के कारण वह दुश्चिंता का शिकार होने लगता है। ऐसी स्थिति में विद्यालयों एवं उसके विभिन्न घटकों जैसे – संस्था प्रधान, अध्यापक, सहपाठी द्वारा विद्यार्थी के आकांक्षा स्तर तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक आंकाक्षाओं के स्तर को ऊँचा उठाये रखना नितान्त जरूरी है ताकि विद्यार्थी किसी भी प्रकार की दुश्चिंता से ग्रसित न हो तथा अपने व्यक्तित्व का उचित विकास करता हुआ अपने उद्देश्य की पूर्ण रूप से पूर्ति कर सके।

दुश्चिंता की दृष्टि से

वैसे देखा जाये तो दुश्चिंता का कोई स्पष्ट कारण नहीं होता। दुश्चिंता से पीड़ित व्यक्ति तनाव, बैचेनी व घबराहट निरन्तर अनुभव करता है। वह अपने आन्तरिक तनाव को कम करने के लिये तंत्रिका तापी प्रतिबल स्थितियों के प्रति आवश्यकता से अधिक प्रतिक्रिया करता है। वह ऐसे प्रतिरक्षा क्रिया तंत्रों का उपयोग करने लगता है जो उसकी स्थिति का सामना तो नहीं कर पाते किन्तु दुश्चिंता को अवश्य बढ़ा देते है, जिससे व्यवहार असामान्य हो जाता है तथा व्यक्ति असंगत क्रियाएं भी कर सकता है।

शैक्षणिक दुश्चिंताएं दुश्चिंता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है, शैक्षणिक दुश्चिंता का हमारे समाज के सभी सदस्यों द्वारा किसी न किसी रूप में सामना करना पड़ता है क्योंकि समाज के प्रत्येक सदस्य को शिक्षा के क्षेत्र में होकर गुजरना पड़ता है। जिससे उन्हें शैक्षणिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसके प्रभाव से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर निश्चित रूप से पड़ता है। ये शैक्षणिक दुश्चिंता व्यक्तित्व के सामान्य विकास में अवरोध पैदा कर सकती है।

पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

दुश्चिंता

दुश्चिंता का सामान्य शब्दों में अर्थ है – एक प्रकार का संवेगात्मक तनाव, खिचाव या झुंझलाहट। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक भौतिकवादी युग में मानव का जीवन इतना जटिल व संघर्षमय बन गया है कि आमतौर पर ऐसा व्यवहार करता है, जो कि उसके आत्म संवेगात्मक तनाव व खिचाव को दर्शाता है। ये तनाव या झुझलाहट उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाता है, जो कि भविष्य की दुश्चिंता का सबसे बड़ा स्रोत होता है।

कैमरान के शब्दो में – "व्यक्ति की एक विशिष्ट भयसूचक संवेगात्मक अभिव्यक्ति की स्थिति ही दुश्चिंता है।"

अतः शैक्षणिक दुश्चिंता को हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं – "शैक्षणिक परिस्थिति में विद्यार्थी की सांवेगिक अवस्था जो उसे लक्ष्य प्राप्ति में निरन्तर बाधा उत्पन करती है, वहीं शैक्षणिक दुश्चिंता कहलाती है।"

केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों जो कक्षा 9, 10, 11 व 12 में अध्ययनरत् है। इन विद्यालयों में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम चलता है तथा मूल्यांकन भी केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा किया जाता है।

विद्यार्थी

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों से है, चाहे वे नवोदय विद्यालय में पढ़ते हो या केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करते है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंताओं का अध्ययन करना।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंताओं की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिंताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध अध्ययन मे ंप्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि को काम में लिया गया, चूंकि शैक्षिक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का अत्यधिक महत्त्व है तथा यह बड़े व्यापक रूप में प्रयोग में ली जाने लाने वाली विधि है। यह अतिप्राचीन विधि है। इसका सम्बन्ध वर्तमान में उपस्थित संस्थितियों अथवा प्रचलित व्यवहारों से है। यह वर्तमान शैक्षिक समस्याओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है तथा इन्हें हल करने की ओर संकेत करती है।

शोध न्यादर्श

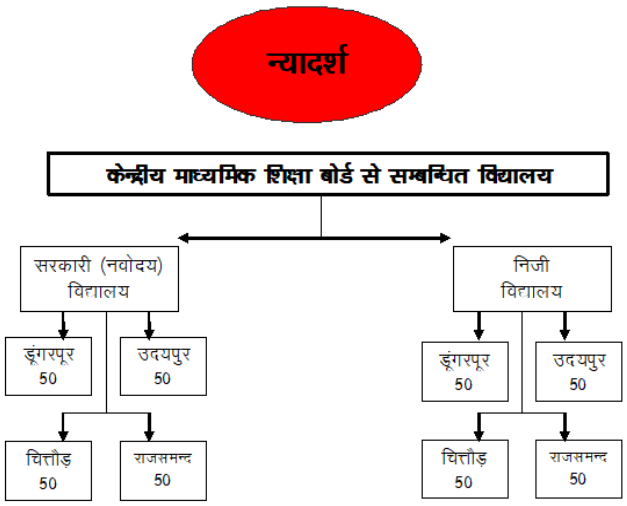

1. विद्यालयों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि से किया गया है।
2. विद्यार्थियों का चयन भी सोद्देश्य न्यादर्श विधि से किया यगा है।

शोध परिसीमन

समय एवं अध्ययन की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन में अद्योलिखित बिन्दुओं का ध्यान में रखा गया है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उदयपुर मण्डल के उदयपुर, चित्तौड़, राजसमन्द एवं डूँगरपुर जिले को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
3. सरकारी केन्द्रीय विद्यालयों के अन्तर्गत प्रत्येक जिले के जवाहर नवोदय विद्यालय को लिया गया है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

शोध में दो प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाये जाते है।

(1) मानकीकृत

(2) स्वनिर्मित उपकरण

चूंकि शैक्षणिक दुश्चिंताओं से सम्बन्धित कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं होने से शोधकर्त्ता ने स्वनिर्मित उपकरण तैयार किया है।

(1) शैक्षणिक दुश्चिंता अभिवृत्ति प्रमापनी (विद्यार्थियों के लिये)

तालिका 1: केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं की अभिवृत्ति का का मध्यमान, मानक विचलन

क्र.सं.	वर्ग	N	मध्य बिन्दु	मध्यमान	मानक विलचन
1.	सरकारी (नवोदय)	200	96	75.08	11.647
2.	निजी	200	96	79.16	13.495

व्याख्या

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिणिक दुश्चिन्ताएं के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 75.08 व 79.16 है, जो कि मध्य बिन्दु 96 से कम है। अतः दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं कें प्रति अभिवृत्ति कम अर्थात् नकारात्मक पायी गयी। इसी प्रकार दोनों वर्गो का मानक विलचन क्रमशः 11.647 तथा 13.495 प्राप्त हुआ। अतः दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। अर्थात् विद्यार्थी शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं से ग्रसित पाये गये।

तालिका 2: केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं की तुलना

क्र॰ सं॰	उपक्षेत्र (घटक)	वर्ग	N	मध्य बिन्दु	मध्यमान	मानक विचलन	"टी" मूल्य	वि.वि॰
1.	शैक्षिक दुश्चिन्ताएं	सरकारी	200	24	21.44	3.465	1.492	अन्तर सार्थक नहीं है।
		निजी	200	24	22.00	4.019		
2.	सामाजिक दुश्चिन्ताएं	सरकारी	200	24	15.92	2.841	0.947	अन्तर सार्थक नहीं है।
		निजी	200	24	16.24	3.839		
3.	मानसिक दुश्चिन्ताएं	सरकार	200	24	20.12	4.101	0.812	अन्तर सार्थक नहीं है।
		निजी	200	24	19.8	3.762		
4.	काल्पनिक दुश्चिन्ताएं	सरकारी	200	24	17.6	5.114	6.838	अन्तर सार्थक है।
		निजी	200	24	21.12	5.179		
5.	समेकित	सरकारी	200	96	75.08	11.647	3.236	अन्तर सार्थक है।
		निजी	200	96	79.16	13.495		

व्याख्या

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि समेकित रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 75.08 व 79.16 आया, जो कि मध्य बिन्दु 96 से कम हैं। इसी प्रकार मानक विलचन क्रमशः 11.647 तथा 13. 495 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 8.306 आया, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है। अर्थात् परिकल्पना सं॰ 2 को अस्वीकृत किया जाता है।

शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं के प्रथम घटक – शैक्षिक दुश्चिन्ताओं के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 21.44 तथा 22.00 आया, जो कि मध्यबिन्दु 24 से कम है। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 3.465 व 4.019 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 1.492 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से कम है। अतः अन्तर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।

शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं के द्वितीय घटक – सामाजिक दुश्चिन्ताओं

के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 15.92 तथा 16.24 आया, जो कि मध्यबिन्दु 24 से कम है। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 2.841 व 3.839 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 0.947 प्राप्त हुआ, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से कम है। अतः अन्तर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।

शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं के तृतीय घटक – मानसिक दुश्चिन्ताओं के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 20.12 तथा 19.80 आया, जो कि मध्यबिन्दु 24 से कम है। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 4.101 व 3.762 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 0.812 आया, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से कम है। अतः अन्तर सार्थक नहीं कहा जा सकता है।

शैक्षणिक दुश्चिन्ताओं के चतुर्थ घटक – काल्पनिक दुश्चिन्ताओं के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 17.60 तथा 21.12 आया, जो कि मध्यबिन्दु 24 से कम है। इसी प्रकार मानक विचलन क्रमशः 5.114 व 5.179 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 6.838 आया, जो कि "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की काल्पनिक दुश्चिन्ताओं के प्रति अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

निष्कर्ष

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणीक दुश्चिन्ता के प्रति अभिवृत्ति नकारात्मक पाई गई अर्थात विद्यार्थी शैक्षिक, सामाजीक, मानसिक, काल्पनिक एवं समेकित दुश्चिन्ताओं से ग्रसित पाये गये।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बन्धित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणीक दुश्चिन्ता के घटक शैक्षिक दुश्चिन्ता, सामाजिक दुश्चिन्ता, माध्यमिक दुश्चिन्ता के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। किन्तु चतुर्थ एवं समेकित दुश्चिन्ता के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की काल्पनिक दुश्चिन्ताओं के प्रति अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

सन्दर्भ

1. Best John W. Element of Educational Research, USA, Pretice Hall Inc. Eagleood Cliff, 1964.
2. Borg Walter. Educational Research an Introduction, New York Longmans, Green of Col. Ltd., 1983.
3. Buch MB. Fourth Survey of Research in Education, New Delhi (NCERT), 1983-88.
4. भार्गव, महेश चन्द्र। "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन", हर प्रसाद भार्गव, आगरा, 1984।
5. गेरिट, हेनरी, ई॰। "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग" कल्याणजी पब्लिशर्स लुधियाना, 1996।
6. Mathur SS. Educational Phycology, Vinod Pustak Mandir Agra, 2008.
7. पाठक पी॰डी॰। "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2008।